Sanskrit (Honours)
B.A. (Ist Part)

(Ist Paper)

डॉ. [illegible]
अतिथि शिक्षक
आर. सी. एस. कॉलेज मेमोल,
बेगूसराय

लघुसिद्धान्तकौमुदी

संज्ञा प्रकरण -

पूर्व में बताया गया है कि आचार्य वरदराज ने अपनी लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञा प्रकरण में स्वरों के भेद को काफी अच्छी प्रकार से बताया है। आचार्य वरदराज प्रसिद्ध पाणिनीय वैयाकरण हैं। उन्होंने आचार्य पाणिनि के अनुरूप ही सारे कार्य किये हैं। आचार्य पाणिनि ने व्याकरण के लिए 'अष्टाध्यायी' का प्रणयन तो किया ही साथ में उन्होंने अपने शिष्यों के लिए 'पाणिनीय शिक्षा' की भी रचना की। सामान्यतः उच्चारण एवं स्वर का समाधान शिक्षा ग्रन्थों से ही होता है। आचार्य पाणिनि ने अपनी 'शिक्षा' में भी इन स्वरों के बारे में विस्तार से बताया है। स्वरों का महत्त्व लौकिक संस्कृत में उतना

नहीं होता क्योंकि इसमें सामान्यतः लिखने एवं पढ़ने का ही अधिक होता है। परन्तु जब लौकिक संस्कृत में छन्दों का आविर्भाव हुआ तो उन स्वरों का महत्व फिर बढ़ने लगा। क्योंकि सम्पूर्ण छन्द स्वरों पर ही आधारित है। लौकिक संस्कृत में पहले बत्तीस अक्षरों वाले अनुष्टुप् छन्द का ही प्राधान्य था जो रामायण, महाभारत या पुराणों में मिलते हैं, परन्तु जैसे जैसे इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा आदि छन्दों का लौकिक संस्कृत में प्रयोग बढ़ने लगा, वैसे-वैसे स्वरों का प्राधान्य लौकिक संस्कृत में भी होने लगा। छन्दों के लिए स्वरों का महत्व काफी अधिक है, क्योंकि बिना इनके छन्द बैठ नहीं पाते।

Rukmini Ram Ma